

**मुख बंद** पुं. (तत्.) घोड़ों को होने वाला वह रोग जिसमें उनका मुँह बंद हो जाता है।

**मुख-बंध** पुं. (तत्.) किसी ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका जिसमें ग्रंथ का विषय-प्रवेश किया जाता है।

**मुखबिर** पुं. (अर.) गुप्त रूप से किसी मामले या खबर का पता लगाने वाला या समाचार लाने वाला व्यक्ति, जासूस।

**मुखबिरी** स्त्री. (अर.) मुखबिर का काम, पद या भाव।

**मुखभूषण** पुं. (तत्.) पान।

**मुखभेड़** स्त्री. (तत्.) दे. मुठभेड़।

**मुखमसा** पुं. (अर.) झगड़ा, बखेड़ा।

**मुख-मैथून** पुं. (तत्.) मैथून या संभोग की एक अस्वाभाविक रीति जिसमें भोग में रत पुरुष स्त्री के मुख में अपना लिंगेद्रिय रखता है।

**मुख-मोद** पुं. (तत्.) 1. सलई का पेड़ 2. काला सहिंजन।

**मुखम्मस** विं. (अर.) जिसमें पाँचों कोने या अंग हों पुं वह पद्य जिसके पाँच चरण हों।

**मुख-यंत्रण** पुं. (तत्.) घोड़े, गाय, बैल आदि की लगाम।

**मुखर** वि. (तत्.) 1. बहुत बोलने वाला या वाचाल 2. बहुत बड़-चढ़कर बातें करने वाला 3. व्यर्थ की बातें करने वाला 4. कड़वा बोलने वाला 5. मुख्य या प्रधान 6. बोलता हुआ।

**मुखीर** वि. (तत्.) अच्छी तरह बोलता या ध्वनि करता हुआ, ध्वनियों या शब्दों से युक्त।

**मुखरोग** पुं. (तत्.) मुख में अर्थात् दाँतों, मसूड़ों, होंठों आदि में होने वाले रोग।

**मुख-लांगल** पुं. (तत्.) सूअर।

**मुखलिस** वि. (तत्.) 1. जो मुक्त हो चुका हो 2. निश्चल 3. निष्ठ, सच्चा 4. अकेला 5. अविवाहित।

**मुख-लेप** पुं. (तत्.) 1. सौंदर्य बढ़ाने के लिए मुख पर किया जाने वाला लेप 2. एक प्रकार का मुख-रोग।

**मुख-लेपन** पुं. (तत्.) मुख पर लेप करना या लगाना।

**मुख-वल्लभ** विं. (तत्.) स्वाद युक्त पुं. अनार का वृक्ष।

**मुख-वाद्य** पुं. (तत्.) मुँह से फूँक मारकर बजाया जाने वाला बाजा या वाद्य-यंत्र।

**मुख-वास** पुं. (तत्.) 1. गंधतृण 2. तरबूज की लता।

**मुख-वासन** पुं. (तत्.) मुख से आने वाली दुर्गंध को दूर करने के लिए मुँह में रखा जाने वाला चूर्ण या औषध जिससे वहाँ से दुर्गंध की जगह सुगंध आ सके।

**मुख-विष्ठा** स्त्री. (तत्.) तिल-चट्टा नामक कीड़ा।

**मुख-शुद्धि** पुं. (तत्.) 1. मुख को शुद्ध या साफ करने की क्रिया या भाव 2. सामान्यतः भोजन आदि करने के बाद इलाचयी, पान, सुपारी आदि रखकर मुख को शुद्ध या साफ करना मुख-शुद्धि कहलाता है।

**मुख-शोधन** पुं. (तत्.) 1. मुख को शुद्ध करना 2. मुख शुद्ध करने के लिए खाया जाने वाला पान सुपारी आदि पदार्थ 3. दाल चीनी वि. चरपरा।

**मुख-शोधी** वि. (तत्.) मुख को शुद्ध करने या उसे शुद्ध बनाने वाला पुं. जंबीरी नींबू।

**मुख-शोष** पुं. (तत्.) 1. मुख के सूखे हुए होने की बात 2. ऐसा कारण जिसके फलस्वरूप मुख सूखा रहता हो 3. प्यास।

**मुख-श्री** स्त्री. (तत्.) चेहरे की सुंदरता, चमक या शोभा।

**मुखसंधि** स्त्री. (तत्.) काव्य. नाट्य विधा के अंतर्गत रूपक की पाँच संधियों में से पहली संधि जिसका आविर्भाव बीज, नाम, अर्थ, कृति और आरंभ नामक अवस्थाओं का योग होने पर माना जाता है।